माननीय मुख्यमंत्री, बिहार, श्री नीतीश कुमार के द्वारा दिनांक–4/06/2015 को दिये गये भाषण का ट्रांसक्रिप्सन

मेरे साथ कार्यक्रम में आये हुए माननीय सांसद R.C.P Singh जी, बाबा साहब भीम राव अंबेडकर विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो0 निहाल प्र0 सिंह जी, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय के इतिहास विभाग के पूर्व विभागाध्यक्ष प्रो0 रतनेश्वर मिश्र जी, मंत्रिमंडल विभाग के प्रधान सचिव और लोक स्वास्थ विभाग के प्रधान सचिव, श्री शिशिर सिन्हा जी, मुख्यमंत्री के प्रधान सचिव, श्री जी0 एस0 गंगवार जी, मुख्यमंत्री के सचिव चचंल कुमार जी, बिहार लेखागार के निदेशक डा0 विजय कुामर जी, इस कार्यक्रम में उपस्थित विशिष्ट अतिथिगण, प्रिंट एवं इलेक्ट्रोनिक मीडिया के प्रतिनिधिगण, देवियों एवं सज्जनों।

आज अभिलेखागार के द्वारा आयोजित एक और समारोह में उपस्थित होकर मुझे खुशी हो रही है। आमतौर पर अभिलेखागार से संबंधित कार्यक्रमों में मुझे इनके कार्यालय में ही जाकर भाग लेने का अवसर मिला था। पहली बार हमारे सचिवालय में कार्यक्रम आयोजित किया गया है। शायद मेरे सुविधा का ख्याल रखते हुए। मैं उन्हें धन्यवाद देता हूँ और पुनः अभिलेखागार के द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम में मुझे आमंत्रित किया है इसके लिए भी मैं धन्यवाद देता हूँ। तीन पुस्तकें प्रकाशित की गयी है, एक ही पुस्तक का तीन खंड है। जितने भी अभिलेखागार में 1913 से 1947 के बीच जो स्वतंत्रता संग्राम के दौरान अनेक प्रकार के लेख प्रकाशित हुए थे, पर्चे वितरित किये गये थे और इस प्रकार की जो सामग्रियाँ थी, जिन्हें उस समय के सरकार अपने लिए खतरनाक मानती थी। सत्ता के लिए खतरनाक मानते थे, प्रतिबंधित मानते थे, वैसे ही Prescribe Document को संकलित करके तीन खण्डों में प्रकाशित किया गया है। और यह बहुत ही महत्वपूर्ण कार्य है। इससे उस अवधि में आजादी की लड़ाई की गति को तेज करने में जो साहित्यकारों ने या अन्य उस समय के राजनीतिक कार्यक्रर्ताओं ने या अन्य लोगों ने जो भूमिका अदा की उसपर एक रोशनी पड़ती है। उस समय, उस समय के बातों को जानने का मौका मिलेगा। और जिनकी भी रूचि है इतिहास में, शोध में और स्वतंत्रता संग्राम के दौरान Document हमारे पास है, जो अभिलेख हमारे पास है, उन अभिलेखों को समय समय पर प्रकाशित करना, तो इस प्रकार के प्रकाशनों से तो अभिलेख सुरक्षित हो ही जाती है और ज्यादा सुरक्षित हो जाती है आने वाले पीढ़ी के लिए। और साथ–साथ लोगो को बहुत कुछ जानने का समझने का अवसर मिलता है। तो ये बहुत ही महन्वपूर्ण है। और इसमें किसी भी प्रकार का छेड़ छाड़ नहीं किया गया है। जो था जिस रूप में था उस रूप में प्रकाशित कर दिया गया है। तो जिनकी भी रूचि है उनके लिये ये Document बहुत ही Interesting है। उनके रूचि को और ही बढ़ायेगा और जहाँ तक मुझे बताया गया है कि बिहार के अभिलेखागार के द्वारा जो ये पुस्तकें प्रकाशित होने वाली थी, तो इसको लेकर पहले से ही इस क्षेत्र में रूचि रखने वालों के बीच दिलचस्पी पैदा हो गयी है

और इसपर समाचार पत्रों ने लिखा भी है। तो मैं समझता हूँ कि ये Document बहुत ही उपयोगी साबित होंगे और ज्यादा से ज्यादा लोगों तक पहुँचे। हमलोगों का ये दृष्टिकोण रहा है। एक नहीं, उनके इस प्रकार के Document प्रकाशित किया है। और सबसे बड़ी चीज है जो भी हमारे पास Reload है। उसका ठीक ढंग से सुरक्षित रखना और साथ साथ उनको प्रकाशित करके ज्यादा प्रचारित करना यानि एक अभिलेखागार में जो Document है अभी प्रकाशकों के जरिये कितने लोगो के घर में पहुँचेगे जो रूचि रखने वाले हैं ऐसे रूचि रखने वाले एक एक व्यक्ति न जाने कितनों को पढ़ाते हैं। उनको जानकारी मिलती है। सब हम Interact करते हैं। तो यह हर किसी को जानने वाली बात तो होती नहीं है। इसमें रूचि हो पर इतिहास के बारे में सबको जानकारी होनी चाहिए। हम अपने इतिहास को नहीं जानेंगे तो न हम अपने वर्त्तमान को सँवार सकेंगे न ही भविष्य की रूपरेखा तैयार कर सकेंगे। इसलिए ये जानना बहुत ही जरूरी है और आजकल इतिहास के साथ फिर छेड़छाड़ की कोशिश हो रही है। और इतिहास के बारे में न जाने क्यों एक विचित्र नजरिया ही अलग है। इतिहास के बारे में ये जो मिथ है, मिथक है यह Mythology को ही इतिहास के रूप में पेश कर रहे हैं। कोई एक धर्म को मानने वाले लोगो में या उन इलाको में ही कई मिथक प्रचारित हो ऐसी कोई बात नहीं है। दुनिया के हर हिस्से में आप जहाँ भी जाइयेगा, इस प्रकार की पौराणिक कथायें आपको मिलेगा। लोग सुनते है। आनंदित होते है। उसकी चर्चा भी करते हैं। उसकी अपनी अहमियत भी है। इसमें कोई दो राय नहीं है। किन्तु जो Mythology में जो बातें है तो लोग उसको सुनते है और अलग–अलग इलाको में, अलग–अलग मिथक प्रचलित है। इसका मतलब यह नहीं है कि वह इतिहास है। वह इतिहास का रूप धारण नहीं कर सकता लेकिन यहाँ मिथक को, Mythology को इतिहास के रूप में पेश करने की कोशिश की गयी है। और तब जब अपने संविधान ने कहा है। वैज्ञानिक चेतना का विकास करेगें। Scientific Temperament का विकास करेंगे। और जो Fundamental duties है उसमें इस बात का समावेश किया गया है कि हर नागरिक का ये कर्त्तव्य है कि जो समाज में एक वैज्ञानिक सोच है वैज्ञानिक मानसिकता है। Scientific Temperament को विकसित करता है। लेकिन वैसे समाज में ऐसी ऐसी बातें Mythology से लेकर इतिहास के रूप में विकसित करने की कोशिश की गयी है। जैसे गणेश जी की मूर्ति हमलोग देखते हैं। गणेश भगवान की तो कहा जाता है कि उस जमाने में इस प्रकार की surgery थी कि हाथी के सिर को उतार करके मनुष्य के सर पर लगा दिया गया। ये जो मिथक है Mathology है उसको एक सच के रूप में और इतिहास के रूप में पेश करने की कोशिश की गयी हैं। ये कोशिश लोगों के विचार को वैज्ञानिक नहीं बनायेंगे। लोगो का वैज्ञानिक सोच विकसित नहीं होगा। बल्कि यह तो दकयानुसी जो विचार है उसको बढ़ावा देगा। तो किसी भी समाज के प्रगति के लिये हम अपने इतिहास को समझें। इतिहास को जानें और अपने भविष्य को संवारने के लिए अपने वर्तमान को दुरूस्त करें। इसकी चेष्टा होनी चाहिये। और यह एक वैज्ञानिक नजरिया है, वैज्ञानिक सोच है। इसके अलावे आप जानते हैं, जिस प्रकार का वातावरण बना है । देश में इसमें सभी पीढ़ी को जो कुछ भी जैसा है उस रूप में उपलब्ध करा दें तो वह एक अपना दृष्टिकोण विकसित कर

सकता है। अगर उनको हम किसी भी चीज को नये सिरे से पूर्वाग्रह से ग्रसित होकर हम उसे पेश करेंगे तो उसका दिमाग अग्रसोची नहीं बन सकेगा। उसका Approach Scientific नहीं हो सकेगा। किसी भी चीज के बारे में वह दकियानुसी विचार से प्रभावित हो जायेगा। तो आज जो दुनिया तेज गति से आगे बढ़ रही है। उसमें हम पिछड़ जायेंगे। एक तरफ तो विकास की बातें कर दी जाती है। और दूसरी तरफ यह दकयानुसी सोच लोगों के अंदर स्थापित करने की बात होती है। इस प्रकार की चर्चा चल रहा है। तो इस परिवेश में अभी हमारे दो इतिहासकार बैठे हैं। उन्होंने इस बात पर चर्चा कर दी इस अभिलेख पर संक्षिप्त टिप्पणी आप, लोगों ने इस विषय पर अपनी टिप्पणी करें, अपनी राय रखें। तो मैं बधाई देता हूँ अभिलेखागार को इनके निदेशक को, अपने मंत्रिमंडल के प्रधान सचिव को और इनके संपादक मंडल के दो सदस्य यहाँ उपस्थित हैं, मैं उन सब को इसके लिये बधाई देता हूँ। बहुत ही परिश्रम करके इस कार्य में लगे हुए हैं। हमारे अभिलेखागार के अन्य लोग जो थे जिनके केस की वकालत कर रहे थे डॉ0 विजय कुमार, ऐसे तमाम लोगों को मैं, बधाई देता हूँ और हमलोगों की दिलचस्पी इस बात में है कि इतिहास को उसी रूप में और स्वतंत्रता संग्राम में जो बिहार की भूमि है। बिहार के लोगों की भूमि है, Unlucky Heroes, बहुत से लोग हैं, जिनके बारे में लोग नहीं जानते है। जिन्हें हम Unlucky Hero के रूप में जानते हैं जिन्होंने अपनी जान की कुर्बानी दे दी सब कुछ त्याग कर दिया वैसे अनेक लोग हैं इस बिहार में। उनके बारे में तथ्यों को इकट्ठा करके और जो भी चीजें यहाँ उपलब्ध है Document में उसके आधार पर बहुत कुछ लिखने की कोशिश हुई है। और अब अभिलेखागार के प्रकाशन नियमित तौर पर होते है। अभिलेख बिहार, शोध पत्रिका इसका प्रकाशन नियमित तौर पर हो रहा है। और आज पाँचवा अंक भी प्रकाशित हुआ है। मै तो यही सलाह दूँगा कि नयी पीढ़ी को इन चीजों को भी देखना चाहिए। अधिक से अधिक इन चीजों को प्रचारित किया जाय हमारे College के पुस्तकालयों में ये चीजें पहुँचे, हमारे Library में, सरकारी–गैर सरकारी Library में ये चीजें पहुँचे, पता नहीं किस किस व्यक्ति के जीवन को ये चीजें प्रभावित कर दें, और कौन कोई नयी बात कह दें, कौन जानता है। अन्ना हजारे फौज में थे और वो क्या कहा करते थे, वो वहाँ पुस्तकालयों में विवेकानन्द की जीवनी पढ़ी, और उसी से प्रेरित हो गये वर्ना वो नौकरी कर रहे थे अपने नौकरी से सेवानिवृत्त हो जाते। आज इतने चर्चित बने तो एक पुस्तक न जाने किसी को किस तरह से प्रभावित कर जाय। इसलिए पुस्तकें जरूर उपलब्ध होनी चाहिये और मैं धन्यबाद करता हूँ कि अभिलेखागार का जो प्रकाशन है उसपर थोड़ी और राशि लगे। वह खर्च करने योग्य है, वह लगाने योग्य है और हर जगह हम इन चीजों को पहुँचाये, सारी Document को पहुँचाये और ये Document बिल्कुल ही अधिकारिक है, Authentic है। इसमें किसी भी प्रकार की छेड़छाड़ नहीं है सबलोग जानेगे और उस समय की जो चीज है, जो समाचार पत्रों में, पत्रिकाओं में प्रकाशित होती थी, उस समय के जो हमारे विद्वान लेखक थे, लिखते थे, उस समय के जो पत्रकार थे, साहित्यकार थे, जो लिखते थे वो आज के लोगो को भी होनी चाहिये। हम तो सलाह देंगे कि जितने भी पत्र–पत्रिकाएँ पटना में है, सबको एक एक Document भिजवा दीजिये। अब उनका काम है कि पढ़े, ठीक से रखे या जो करे। लेकिन

अपनी तरफ से मैं जरूर कहूँगा कि इन लोगों को भी जरूर भेजवाईये, एक एक जो भी समाचार पत्र है electronic Media है वो जिनके कार्यालय हैं। उनमें जरूर किताबें रखी होगी। अभिलेखागार से संबंधित जो भी चीजें है, जिन्हें आपलोगो ने Documentation किया है वह भी उनको पहुँचा दीजिये। देखिये ये चीजें जब मिली रहेगी तो वो भी कभी–कभी उन्हें देखेंगे। तो उसको Focus में लायेंगे। आजादी की लड़ाई में बिहार के लोगों ने क्या किया तो इसका Serial ही शुरू कर दें। समाचार पत्रो में कोई इसका Series ही लिखे। अभी बिहार में मैने देखा कि पिछले 9 वर्षो में न जाने कितने स्वतंत्रता की कहानी छपी है। Success story जिसको कोई नहीं जानता है और उनकी कहानी छापी गयी। तो उससे उस धारणा को बल मिलता है। स्वयं भी हम कुछ कर पायें, ये जो प्रकृति है ये बलबती होगी। वर्ना हर चीज के लिए Government पर Depend हो जाते हैं। सरकार क्या करती है, आज क्या है, लोगो में आम चर्चा का विषय क्या होता है। बस सरकार, सरकार छोड़कर और कुछ है ही नहीं। तो जो लोग बहुत कुछ करते हैं, सरकार से अलग–अलग उनकी कहानी आती है, तो उससे लोगो के मन में प्रेरणा उत्पन्न होगी। तो मैं समझता हूँ कि इस प्रकार के Document मीडिया के पास Print and Electronic Media और Social Media के पास रहेंगे तो कभी भी कोई इन चीजों से प्रभावित हो जाय। तो रोज–रोज उठापटक की खबरें रहती है। उठापटक राजनीतिक की खबरें रहती है। समाचार पत्र उलटिये तो खाली उठापटक की खबरें रहती है। कुछ हंगामा की खबरें रहती है तो कुल मिलाकर, यही ले देकर सबेरे–सबेरे उठने पर जो मनुष्य की स्थिति होती है उसमें हम उसके इर्द गिर्द हम साकारात्मक तरंगे पैदा कर सके कितनी साकारात्मक स्थिति आयेगी। सबेरे –सबेरे हम ये पढ़ते है कि फलनमा ये बोला यही न मामला है, और क्या मामला होती है। अब खबर में छप जाय की 1917 में बापू कैसे आये चम्पारण तो लोग देखेंगे, ऐसा नहीं है कि उसको नहीं पढ़ेगे, उसको भी गौर से पढ़ेगे। ये तो लिखने वाले का कला पर निर्भर करती है, और Electronic media में Anchor के Present करने की तरीके पर निर्भर करता है। तब किसी भी चीज पर दिलचस्पी पैदा हो सकती हैं। ऐसा नहीं है कि लोगों के मन में इनचीजों के प्रति दिलचस्पी नहीं है। खूब दिलचस्पी है, अब बिहार का जो एहसास करता है, पहले बिहार के बारे में किया था, बिहार के बारे में और कोई चर्चा ही नहीं होती थी, बिहार के बारे में तो यही चर्चा होती है कि बिहार बदहाली की कहानी है। और दुसरी चीज बिहार में Caste छोड़कर दूसरी चीजों पर चर्चा ही नहीं होती है। कई लोगों ने तो यहाँ तक कह दिया कि बिहार का DNA। में ही जात है। हमलोगो को जातीवादी और हमलोगों के DNA में जात है। इसके अलावे कुछ सोच ही नहीं है, कोई नजरिया ही नहीं है रचनात्मकता ही नहीं है। क्रांतिकारीकता ही नहीं है, प्रगतिशील सोच ही नहीं है। यही सब हमलोगों के बारे में प्रचारित किया गया है। लेकिन इतना गौरवशाली इतिहास बिहार के नाम से जाना जाता है जो उसका अपना जो इतिहास है ढाई हजार साल पहले का, तीन हजार साल पहले का वह इतिहास भारत का इतिहास नहीं है, वह पुरी मानव जाती का इतिहास है, मानव सभ्यता का इतिहास है। तो हम इतना आगे है। जाकर बिहार को देखिये। नालंदा बगैरा, विक्रमशिला, बोधगया तो सभी चले जाते है। ऐसे खुब सारे स्थल है। जिनको आप देखेगें तो आपके मन में न सिर्फ

कौतहल उत्पन्न होगा, बल्कि उसके साथ–साथ मन में गौरव का ऐहसास होगा। तो हमारा इतिहास कितना गौरवशाली है। लेकिन वर्तमान में हमें इसकदर बदनाम कर दिया गया है कि हम खुद ही इस Complex का शिकार हो गये है। उससे निकालना है। नयी पीढ़ी को निकालना है। और हमलोगों का सकंल्प है कि जब हमारा इतिहास इतना गौरवशाली है तो हम फिर से उस गौरव को प्राप्त करेगें, बिहार आगे बढ़ेगा और बिहार बाहर को भी दिशा देगा और पुरी दुनिया को दिशा देगा। तो ये भावना विकसित करना है। अलग–अलग कालखण्डों का जो भी Document सरकार के पास उपलब्ध है, उससे भी एक हद तक रौशनी पड़ती है। तो इस प्रकार के अभिलेखो का Record का Documentation, जितने भी हमारे अभिलेख है, उनका Doccument करना, उनको प्रकाशित करना, Preserib करना, हर प्रकार से Intearct करना आज के Teehonologies के हिसाब से ताकि सब दिन के लिए सुरक्षित रखे। तो ये बहुत महत्वपूर्ण चीजे है। बहुत लोगो को समझ में नहीं आता है कि क्या है। इसलिए बहुत लोग बोलते रहते है कि Museum क्या बनायेंगे, कभी–कभी मुझको आश्चर्य होता है, Museum किया है हमारी धरोहर के बारे में अपनी धरोहर के बारे में लोगों को ऐहसास नहीं है। तो वो क्या खाक आज को ठीक करेगा और कल बनायेगा। जिसको अपने इतिहास का ज्ञान नहीं है। हम भावी पीढ़ी को क्या दिखाना चाहते है। एक ले देकर पुराना तारामंडल कल उसका भी आधुनिकीरण होगा तो उसके पास तो सब जानकारी होनी चाहिये। नयी पीठी को फलने का फुलने का मौका दिजीये। हर चीज को जानने का अवसर दिजीय। आज कि जो नयी Tecnologies आ रही है वह एक बटन दबा कर बहुत सारी चीजों की जानकारी ले लेते है। इतिहास को उसी रूप में बीना किसी छेड़छाड़ करके सहजढ़ग से उसके सामने अगर प्रस्तुत करें तो बहुत सारे बातें उसके मानसपटल पर अंकित हो जायेंगी। जो जीवनभर उसको गाइड करती रहेगीं तो इन चीजों को कभी कभी लोग समझतें नहीं है। मुझे भी अफसोस हुआ था जब मैं Museum बनाने का Decision ले रहा था, World class museum बिहार में तो एक बयान छपा था कई लोगों का पढ़े लिखे लोगों का ब्यान था कि क्या जरूरत है? मैं सचमुच आश्चय चकित हो गया। भाई न सड़क का काम रोक रहे है, न बिजली का काम रोक रहे है, न कल्याण का काम रोक रहे हैं। ये सब काम कर रहे है, इसके साथ–साथ अपनी धरोहर को संजोने और उसको प्रदर्शित करने का गौरवशाली कार्य कर रहे है तो यह आवश्ख्यक है या नहीं। यह भी एक बहुत आवश्यक अंग है, प्रगति का और इससे ही आगे जितना भी बन पड़ा है हमने इसे प्रोत्साहित करने का प्रयास किया है। और मुझे खुशी है कि अनेक कार्यक्रमों में मै भाग लेता रहा हूँ। और दर्जनों पुस्तकें प्रकाशित हुई है। तो मुझे इस बात की खुशी है कि कोई लिखेगा तो नहीं, लेकिन आत्मसंतोष होगा कि साहब मेरे कार्यकाल में इतने Record का Documentation हुआ। वह कभी खत्म नहीं होगा। इन्ही शब्दों के साथ मै अभिलेखागार को और मंत्रिमंडल सचिवालय को बधाई देता हूँ और आप सब लोग जो इस कार्यक्रम में उपस्थित हुए हैं। अभिलेखागार में तो मुश्किल से 60 या 70 लोगों की बैठने की व्यवस्था रहती थी पर पता नहीं आज ये चमत्कार कैसे हो गया। यह शिशिर सिन्हा जी का चमत्कार है। ये इंजीनियर का कमाल है बहुत से इंजीनियर बैठे हैं बहुत लोग कहेंगे की इंजीनियर को किया

मतलब है इतिहास से तो मै भी इंजीनियरिंग की पढ़ाई की है। तो मेरे विरादरी के लोग भी कुछ इतिहास में रूची ले यह सब किताब पढ़े आने वाले पीढ़ी को प्रेरित करे। बहुत बहुत धन्यवाद।